E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

बानपुर नरेश मर्दन सिंह की 1857 की क्रांति में भूमिका

आकाश शर्मा

शोधार्थी, इतिहास अध्यनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.14202734**

बानपुर रियासत का उदय चन्देरी रियासत से हुआ था। जब जहाँगीर ने वीरसिंह देव को ओरछा का शासक बनाया था तब रामशाह को चन्देरी - बार का राजा घोषित किया गया। यही से चन्देरी वंश का सूत्रपात हुआ। 1811 ई. तक चन्देरी पर बुन्देला शासकों का राज्य रहा था। इस पर क्रमशः रामशाह, संग्रामशाह, भारतशाह, देवी सिंह, दुर्गसिंह, दुर्जन सिंह, मानसिंह, अनिरूद्ध सिंह, रामचन्द्र, प्रजापाल एवं मोर प्रहलाद ने शासन किया।

मोर प्रहलाद कुशल प्रशासक नहीं थे। यह अत्यंत विलासी, अभिमानी, उदण्ड और दिशाहीन थे। इस कारण मोर प्रहलाद की लोकप्रियता दिनों दिन कम होने लगी। इसी बीच सिन्धिया के फ्रेन्च सेनापति बेप्टिस्ट द्वारा तालबेहट और चन्देरी पर अधिकार कर लिया गया और मोर प्रहलाद को ओरछा राज्य के चन्दपूरा में जाकर बसने के लिए विवश होना पड़ा। बाद में कुंवर मानसिंह की बुद्धिमत्ता के कारण सिन्धिया एवं मोर प्रहलाद के मध्य शांति का प्रस्ताव रखा गया जिसकी मध्यस्थता ओरछा नरेश द्वारा की गयी। इस प्रस्ताव से चंदेरी राज्य के कुल राजस्व का दो तिहाई भाग सिंधिया को और एक तिहाई भाग मोर प्रहलाद को मिला। इस संधि से मोर प्रहलाद को चंदेरी प्राप्त नहीं हुआ था अतः बानपुर को राजधानी बनाया गया और यही से बानपुर रियासत का उदय हुआ।

- महाराज मर्दन सिंह :-

महाराजा मर्दन सिंह का जन्म 19 अक्टूबर 1802 ईस्वी में अश्विनी शुक्ल शरद पूर्णिमा को चन्देरी में हुआ। उनके पिता महाराज मोर प्रहलाद तथा माता ग्राम खुटगुंवा के परमार पर्वत सिंह की पुत्री राजकुंवर थी। 1842 ई. में महाराज मोर प्रहलाद के निधन पर मर्दन सिंह बानपुर के महाराज बनते है। मर्दन सिंह को सिन्धिया नरेश द्वारा चन्देरी रियासत छीन लिया जाना पसंद नही था। इसलिए मर्दन सिंह चंदेरी रियासत को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयासरत थे। चन्देरी प्राप्त करने का मौका उन्हें 1843 ईस्वी के बुन्देला विद्रोह में मिला। मर्दन सिंह ने चन्देरी प्राप्त करने की अभिलाषा से बुन्देला विद्रोह के दमन में अँग्रेजों का समर्थन किया। दरअसल बुन्देला विद्रोह के भागीदार नारहट के मधुकरशाह कम्पनी के इलाके में डाका डालकर बानपुर रियासत में रहने लगे थे और राजा मर्दन सिंह अपने क्षेत्र से बगावत और डकैती को समाप्त करना चाहते थे। इन्हीं कारणों से मधुकरशाह जब अपनी बहन के यहाँ विश्राम कर रहे थे तब राजा मर्दन सिंह ने अपने सैनिक अधिकारी की अध्यक्षता में सेना को रवाना कर सोते समय मधुकरशाह को बंदी बना कर उसे अँग्रेज को सौंप दिया। चंदेरी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

राज्य अभी भी सिंधिया के पास ही था। महाराजपुर के युद्ध के पश्चात हुयी 1844 की संधि से चंदरी राज्य अँग्रेजों को प्राप्त हो गया था। जिसे अँग्रेजों ने स्वयं के पास रखा और चन्देरी प्राप्त करने की राजा मर्दन सिंह की अभिलाषा पूरी नही हो सकी।

- बानपुर और झाँसी :-

झाँसी और बानपुर के आपसी सम्बन्धों में मधुरता उस समय आई थी जब संकट के समय मोर प्रहलाद ने अपना आश्रय स्थल झाँसी को बनाया था। बाद में हालात सुधरने पर वह पुनः अपने राज्य में चले गए थे। राजा मर्दन सिंह ने झाँसी से अपने सम्बन्ध अच्छे कायम रखें। जब झाँसी के राजा गंगाधर राव गंभीर बीमारी से पीड़ित थे और 21 नवंबर 1853 ई. को असाध्य बीमारी से उनका निधन हो गया। तब राजा मर्दन सिंह शोक प्रकट करने झाँसी आए थे। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई से सहानुभूतिपूर्ण बातें कर ढांढस बंधाया। राजा मर्दन सिंह ने कम्पनी की भारतीय संस्कृति और धर्म विरोधी नीति पर रानी का ध्यानाकर्षण कराते हुए कहा "वास्तव में दत्तक पुत्र की स्वीकृति का बंधन अँग्रेजों ने अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिए लगाया है वे यथासंभव दत्तक पुत्र को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं रहते हैं। झाँसी अँग्रेजी कंपनी की नहीं हो सकती आप ही झाँसी की प्रमुख है और यदि अँग्रेजी कम्पनी ने अन्याय किया तो झाँसी उनकी फांसी बन जाएगी।

1854 ई. में लॉर्ड डलहौजी ने अपनी व्यपगत नीति का अनुसरण करते हुए झाँसी को अँग्रेजी राज्य में मिलाने की आज्ञा दे दी। मार्च 1854 ई. को इस आज्ञा को लागू कर दिया गया। रानी लक्ष्मीबाई को किला छोड़ना पड़ा तथा निर्वासित जीवन के रूप में नगर में रहने लगी। उनके जीवन यापन के लिए पेंशन की व्यवस्था की गई। मर्दन सिंह को इस घटना से बहुत दुःख हुआ। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को पत्र लिखा "इस समय उपद्रव करके सफलता की आशा नहीं है अब धैर्य के साथ संगठन को मजबूत किया जाए "। राजा बानपुर की सहानुभूति से रानी लक्ष्मीबाई के हृदय में प्रगाढ़ विश्वास हो गया। राजा मर्दन सिंह ने रानी लक्ष्मी बाई को समर्थन देने की बात की थी और 1857 की क्रांति में उन्होंने लक्ष्मीबाई की सहायता की थी।

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। जिसकी शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ से सिपाही विद्रोह के रूप में हुई थी। धीरे धीरे यह विद्रोह कानपुर, दिल्ली, झाँसी अवध आदि स्थानों तक फेल गया और इसका स्वरूप बदलकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक 'जनव्यापी विद्रोह' का हो गया। स्वतंत्रता संग्राम के इस युद्ध में झाँसी में विद्रोह का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई ने किया था जिसमें उनका साथ बानपुर के राजा मर्दन सिंह द्वारा भी दिया गया था।

- ललितपुर में क्रांति :-

झाँसी में विद्रोह की जानकारी जब ललितपुर पहुँची तो 12 जून को सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों ने यूरापियो को बंदी बना लिया और यूरोपियन अधिकारी अपने प्राण बचाने के लिए बानपुर नरेश मर्दन सिंह की शरण में चले गये। राजा मर्दन सिंह ने कैप्टन ए सी. गार्डन एवं अन्य अँग्रेजों को सुरक्षित मसौरा दुर्ग में पहुँचा दिया। क्योंकि राजा मर्दन सिंह की शरण में आए की रक्षा करना उनका धर्म था लेकिन इनका उद्देश्य तो अँग्रेजी कम्पनी को समाप्त करना था। यही कारण है एक ओर इन्होंने अँग्रेजों को संरक्षण दिया और दूसरी ओर अँग्रेजों से युद्ध करके क्षेत्र विस्तार भी किया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

12 जून 1857 ई. को मर्दन सिंह ने मालथोन की घाटी के ऊपरी मार्ग पर कब्जा कर लिया था। झाँसी के लिए डाक व्यवस्था प्रारम्भ की और ललितपुर नगर की बाहरी चौकियों पर कब्जा जमाया और 11 जुलाई को राजा मर्दन सिंह ने नारहट के ठाकुरो के साथ मिलकर मालथोन पर अधिकार कर लिया था।

बानपुर नरेश मर्दन सिंह ने ललितपुर एवं चन्देरी के क्षेत्रों में अराजकता दूर करने का संकल्प लिया था परंतु चन्देरी पर विद्रोहियों ने कब्जा कर लिया था। मर्दन सिंह चंदेरी पर अधिकार करना चाहते थे अतः मर्दन सिंह ने पर्वत सिंह के साथ जवाहर सिंह को चंदेरी पर अधिकार के लिए भेजा। जब बानपुर नरेश को सूचना मिली कि चंदेरी में विद्रोहियों की संख्या ज्यादा है तब इन्होंने जवाहर सिंह और पर्वत सिंह को पुनः निर्देशित किया कि आक्रमण मेरे आने के बाद करें। मर्दन सिंह ललितपुर से राजघाट होते हुए प्रानपुरा पहुँच गये। जहाँ पर्वत सिंह व जवाहर सिंह रूके थे। रात में चन्देरी को जीतने की योजना तैयार की गयी। दूसरे दिन चन्देरी के दुर्ग को घेर लिया गया। किले में विद्रोहियों को किले को खाली करने का संदेश भिजवाया विद्रोहियों की तरफ से संदेश आया यह किला बानपुर के पुरखों का है हम धोखेबाज फिरंगियों को देश से बाहर निकालना चाहते है किला इसी शर्त पर दिया जाएगा कि इस किले का प्रयोग विद्रोहियों के दमन के लिए नही किया जाऐगा। बानपुर नरेश ने आश्वासन दिया की वह किले पर अधिकार अपना समझकर ही करना चाहते है और फिर सभी ने बानपुर नरेश का भव्य स्वागत किया।

चन्देरी पर अधिकार के बाद राज मर्दन सिंह सहराई, रमपुर, शहपुरा होते हुए धौरा, डोगरा, पाली की व्यवस्था सम्हालते हुए बरौदिया पहुँचे। बरौदिया शाहगढ़ रियासत में आता था। वहाँ पर मर्दन सिंह की मुलाकात शाहगढ़ नरेश बखतवली के छोटे भाई उदयराज सिंह से हुयी। यहाँ से दोनों शाहगढ़ राज्य पहुँचे।

शाहगढ़ नरेश बखतवली तथा बानपुर नरेश ने तत्कालीन बुन्देलखण्ड की स्थिति पर शाहगढ में विचार विमर्श किया। दोनों ने आस पास के जागीरदारों तथा प्रभावशाली वीर पुरुषों को स्वतंत्रता संग्राम के इस महायुद्ध में शामिल हेतु आमंत्रण भेजा। इस प्रकार ये दोनों अँग्रेजी कम्पनी को भारत से निकालने के लिये प्रतिबद्ध हो गये। इसी प्रयास में 7 जुलाई 1857 को खुरई पर लम्बरदार करूण सिंह एवं गनेश जू के साथ मिलकर बानपुर नरेश ने कब्जा कर लिया तथा बानपुर नरेश ने नरियावली में पॉच सौ सैनिक का दल भेजा। 19 जुलाई को बानपुर नरेश के कहने पर जवाहर सिंह ने नरयावली पर आक्रमण किया एवं उस पर अधिकार कर लिया।

सागर में 1 जुलाई को सेना ने विद्रोह कर दिया था। इधर शाहगढ़ के राजा बखतवली एवं बानपुर के राजा मर्दन सिंह साथ आ गये थे। दोनों ने मिलकर सागर का अभियान किया। दरअसल सागर में हुए विद्रोह को दबाने के लिए लेफ्टिनेंट हैमिल्टन 31 वीं पलटन के साथ बिनैका पहुँचा तथा वहाँ से विद्रोहियों को हटा दिया लेकिन शाहगढ़ नरेश बखतवली ने हैमिल्टन को हटाकर बिनैका पर कब्जा कर लिया और 20 जुलाई 1857 ई. को मर्दन सिंह को पत्र लिखा कि उन्हें सैनिक मदद की आवश्यकता है। बानपुर नरेश मर्दन सिंह को 22 जुलाई 1857 को खुरई में यह पत्र मिला और उन्होंने 1300 सैनिकों के साथ सागर की ओर प्रस्थान किया। मर्दन सिंह ने सागर से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित राहतगढ़ किले पर अधिकार कर लिया तथा इसे अपना केन्द्र बनाया।

बानपुर नरेश मर्दन सिंह ने सागर के किले को भी घेर लिया और तोपखाने से किले पर आक्रमण किया। ब्रिगेडियर सेज ने हमले के विरूद्ध सेना खड़ी कर दी और यह युद्ध अनिर्णायक रहा। 17 सितम्बर 1857 ई. को मर्दन सिंह ने पुनः सागर किले पर आक्रमण किया। प्रारंभ

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

में आक्रमण राहतगढ़ फाटक की ओर से किया। यहाँ कर्नल डैलेल ने विद्रोहियों को पीछे हटने पर मजबूर किया। मर्दन सिंह अपनी सेना के साथ नरयावली के जंगल में छुप गये और मौका पाकर कर्नल डैलेल की सेना पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में सेनानाइक कर्नल डैलेल युद्ध में मारा गया।

इस प्रकार बानपुर नरेश मर्दन सिंह ने अँग्रेजी सेना को परेशान करके रखा था।

- बानपुर नरेश का संघर्ष एवं दमन-

बुन्देलखण्ड में बढ़ते विद्रोह के दमन के लिए 19 सितम्बर 1857 को अँग्रेजी सेनानायक ह्यूरोज बम्बई पहुँचा। 6 जनवरी 1857 को जनरल ह्यूरोज ने इन्दौर से सागर की तरफ कूच किया। सर्वप्रथम ह्यूरोज ने राहतगढ़ पर आक्रमण किया। गढ़ा अम्बापानी का नवाब मर्दन सिंह के सहयोग से राहतगढ पर शासन कर रहा था। यह विद्रोहियों का केन्द्र बन चुका था। यहाँ शाहगढ़ नरेश बखतवली, बानपुर नरेश मर्दन सिंह, आदिल मोहम्मद खॉ, फाजिल मौहम्मद खॉ आदि थी ठहरे हुए थे। इन्होंने सागर के सभी रास्ते पर नाकाबंदी कर रखी थी। सागर किले में फंसे यूरोपियों को मुक्त कराने हेतु राहतगढ़ को जीतना आवश्यक था। जनरल ह्यूरोज ने राहतगढ़ का घेरा डाला। 3 दिन तक युद्ध चला लेकिन विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण नही किया। 28 जनवरी को ब्रिटिश सेना किले के अन्दर घुस गई। इसी समय बानपुर नरेश मर्दन सिंह द्वारा ब्रिटिश सेना पर आक्रमण कर दिया। इससे राहतगढ़ किले के विद्रोहियों को जंगल में भागने का मौका मिला हालांकि विद्रोहियों की वीरगति प्राप्त हुयी।

बानपुर नरेश मर्दन सिंह राहतगढ़ किले से निकलकर बरौदिया चले गये परन्तु 30 जनवरी 1858 ई. को ह्यूरोज ने बानपुर नरेश के विरुद्ध बरौदिया पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में कम्पनी की विशाल सेना के सामने डटकर मुकाबला करना बानपुर नरेश के सामने चुनौती बन रहा था। इसी युद्ध में फाजिल मौहम्मद खॉ मारा गया और बानपुर नरेश मर्दन सिंह घायल हो गये लेकिन वे भागने में सफल रहे। बानपुर नरेश अपनी सेना के साथ खुरई चले गये। ह्यूरोज 3 फरवरी को सागर पहुँच जाता है।

- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और मर्दन सिंह :-

बानपुर नरेश तथा रानी लक्ष्मीबाई के पत्र व्यवहार से ज्ञात होता है कि रानी लक्ष्मीबाई का बानपुर नरेश मर्दन सिंह पर पूर्ण भरोसा था। दोनों ही राष्ट्र के प्रति समर्पित थे। पत्र में रानी लक्ष्मीबाई ने बानपुर नरेश के फोज की तैयारी पर प्रशंसा की थी। पत्र में रानी लक्ष्मीबाई ने लिखा था "आपुन ने लिखी कै फौज की तैयारी में लगे हों सो मन को खुशी भई, हमारी राय है कै विदेशियों का सासन भारत पर न भओ चाहिए और हमको अपुन कौ बड़ौ भरोसो है और हम फोज की तैयारी कर रहे है। सो अंगरेजन से लड़वौ बहुत जरूरी है।"

रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी सहायता के लिए बानपुर नरेश को झाँसी बुलाया। राजा मर्दन सिंह ने लक्ष्मीबाई को सक्रिय रूप से सहायता की और अपने ज्येष्ठ पुत्र शेरजीत सिंह को 1600 सवारों के साथ झाँसी भेजा। दूसरी ओर मर्दन सिंह ने मालथौन ओर अमझरा घाटी पर अपनी सेना तैनात की।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

1 मार्च 1858 को ह्यूरोज ने मालथौन पर आक्रमण कर दिया जिसका बानपुर नरेश ने डटकर सामना किया अन्ततः ह्यूरोज का मालथौन पर कब्जा हो गया। दूसरी तरफ 4 मार्च को कैप्टन हैयर ने शाहगढ़ दुर्ग पर हमला कर दिया और शाहगढ़ नरेश बखतवली को शाहगढ़ छोड़ना पड़ा और उन्होंने ठनगना घाटी पर मौर्चा सम्हाला। इस समय अमझरा घाटी पर मर्दन सिंह ने मोर्चा सम्हाला। ह्यूरोज ने मर्दन सिंह को उलझाने के लिये मेजर को भेजा और स्वयं ठनगना घाटी पर हमला किया और ठनगना घाटी पर अधिकार कर लिया लेकिन शाहगढ़ नरेश को नहीं पकड़ सका।

ह्यूरोज के ठनगना घाटी पर कब्जा किये जाने से राजा मर्दन सिंह अत्यंत दुखी हुए क्योंकि अब मालथौन पर कब्जा करने का कोई फायदा नही था। अतः मर्दन सिंह ने झाँसी की रानी को ह्यूरोज के बारे में सूचित कर दिया। विष्णुभट्ट गोडसे ने अपनी कृति माँझा प्रवास में लिखा है कि बानपुर नरेश ने अपने परिवार को भी रानी लक्ष्मीबाई के पास सुरक्षा के लिये छोड़ा था।

इधर ह्यूरोज मदनपुर घाटी के कई गढ़ों पर विजय करते हुए बानपुर के किले पर पहुँचा और बानपुर के किले की दीवारों को बारूद से उड़वा दिया। आगे ह्यूरोज ने पलौरी, जमालपुर और तालबेहट पर भी अधिकार कर लिया। दूसरी तरफ मेजर बानपुर नरेश मर्दन सिंह का पीछा कर रहा था। मेजर ने केलगुंवा के किले को ध्वस्त कर दिया। अतः मर्दन सिंह केलगुंवा से बरूआ सागर की ओर चले गये। ह्यूरोज 17 मार्च को बेतवा पार कर चुका था। झाँसी की रानी ने मर्दन सिंह से मदद की गुहार लगाई थी बानपुर नरेश झाँसी पहुँचने के लिए प्रयत्नशील थे किन्तु इनको रोकने के लिये ह्यूरोज ने सेना का गठन किया था।

इधर चरखारी का राजा रतन सिंह ब्रिटिश कम्पनी की सहायता कर रहा था। अतः तात्या टोपे, बानपुर नरेश मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ नरेश बखतवली की सम्मिलित सेना ने चरखारी पर आक्रमण किया और 24 तोपे एवं तीन लाख रुपये दण्डस्वरूप लेकर कालपी की ओर रवाना हुये। यहाँ खबर मिली कि ह्यूरोज ने झाँसी को घेर रखा है और रानी ने मदद की गुहार की है। अतः तात्या टोपे ने नाना साहब की आज्ञा से झाँसी की ओर कूच किया। इसमें बानपुर मर्दन सिंह भी साथ में थे। उन्होंने ह्यूरोज की सेना पर पीछे से आक्रमण किया परन्तु झाँसी से समुचित मदद न मिल पाने के कारण बानपुर नरेश व तात्या टोपे ह्यूरोज की सेना का सामना न कर सके और भागकर कालपी पहुँच गये। झाँसी की रानी भी कालपी में आ गयी और विद्रोहियों की सम्मिलित सेना का सेना नायक तात्या टोपे को बनाया गया। कालपी में राजा मर्दन सिंह ने झाँसी - कालपी मार्ग में अपना घेरा डाला, शाहगढ़ नरेश ने उरई - कालपी के मध्य शिविर लगाया।

कालपी में ह्यूरोज की सेना से प्रथम मुकाबला बानपुर नरेश का हुआ। मर्दन सिंह ने बहादुरी के साथ युद्ध किया परन्तु अपने को घिरता देख घेराबंदी तोड़कर बच निकले एवं यहाँ से ललितपुर आये। 2 जून को रानी लक्ष्मीबाई ने मुरार से बानपुर नरेश को पत्र लिखा परन्तु वे रानी लक्ष्मीबाई की मदद नही कर सके क्योंकि अँग्रेजी सेना ने इनका मार्ग अवरूद्ध कर रखा था फलस्वरूप वे मुरार नही पहुँच सके।

बानपुर नरेश इस स्वतंत्रता संग्राम में लड़ते हुए निराश हो चुके थे न उनके पास धनबल था ना ही जनबल। बानपुर राज्य पर भी कम्पनी का अधिकार हो चुका था। अतः सागर के कलेक्टर ने बानपुर नरेश को आत्मसमर्पण के लिए पत्र लिखा। इस समय तक लक्ष्मीबाई वीर गति प्राप्त कर चुकी थी। हिन्दुस्तान में अधिकांश स्थानों पर कम्पनी का अधिकार हो चुका था। कम्पनी सरकार ने उन्हें ससम्मान जीने का आश्वासन दिया। दतिया नरेश जिनके यहाँ मर्दन सिंह का परिवार रहा था और एम ए स्काट जिनकी जान मर्दन सिंह ने बचाई थी इन दोनों ने हेमिल्टन को पत्र लिखा कि मर्दन सिंह के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया जाए।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

हेमिल्टन ने पत्र लिखकर सरकार के सचिव जी.एफ एडमन्डसन को अवगत करा दिया। ब्रिटिश सरकार और ग्वालियर के पोलिटिकल एजेन्ट ने सूचित किया कि बानपुर नरेश को 800 रू0 मासिक भत्ता दिया जायेगा एवं उनका परिवार दतिया में रह सकता था। मर्दन सिंह की स्वतंत्रता पर सीमित नियंत्रण होगा और बुन्देलखण्ड के बाहर लाहौर में नजरबंद रहना होगा। हताश होकर 5 जुलाई 1858 ई. को बानपुर नरेश ने आत्मसमर्पण कर दिया।

रानी लक्ष्मीबाई द्वारा मर्दन सिंह को लिखे पत्र -:

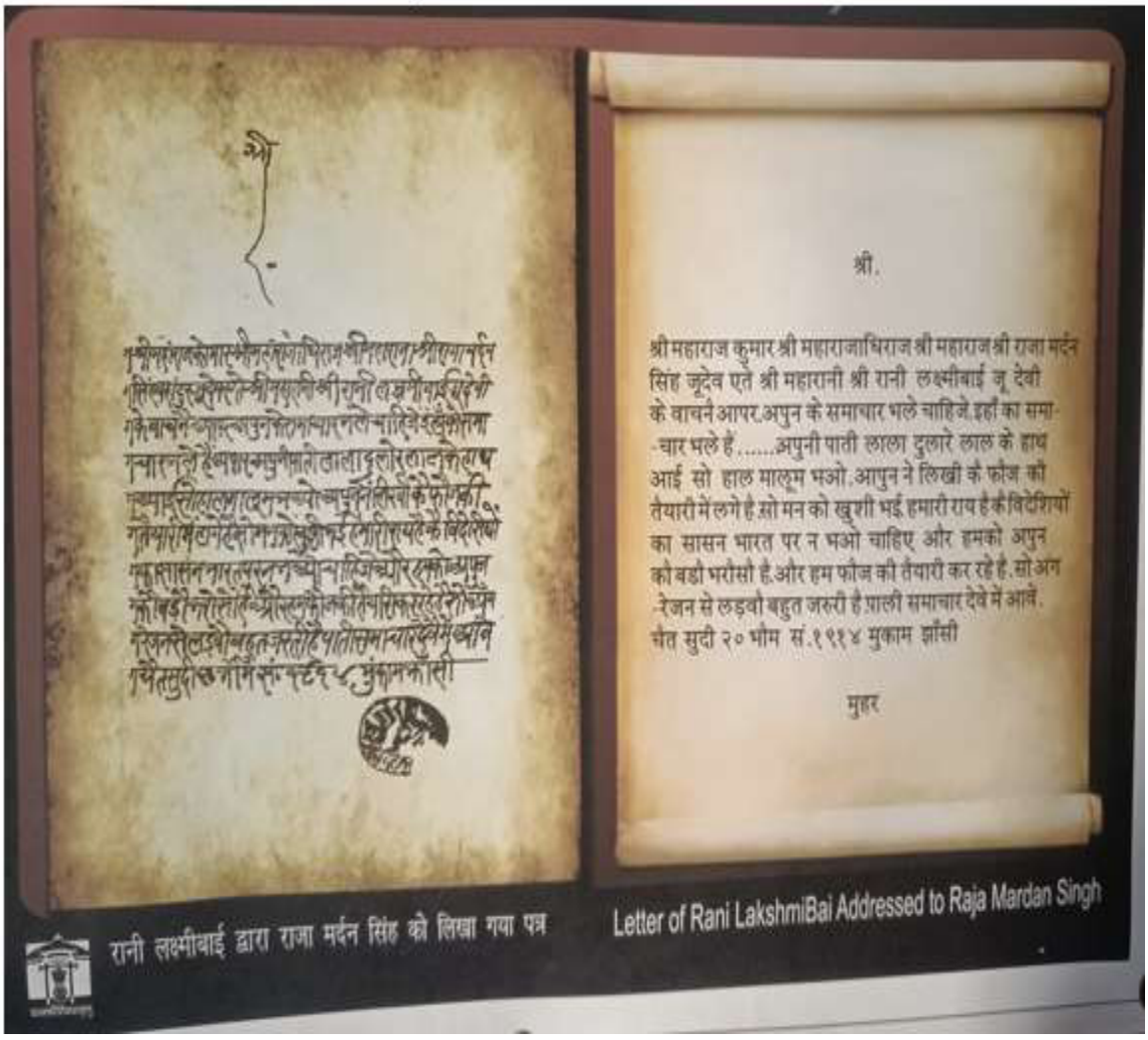

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

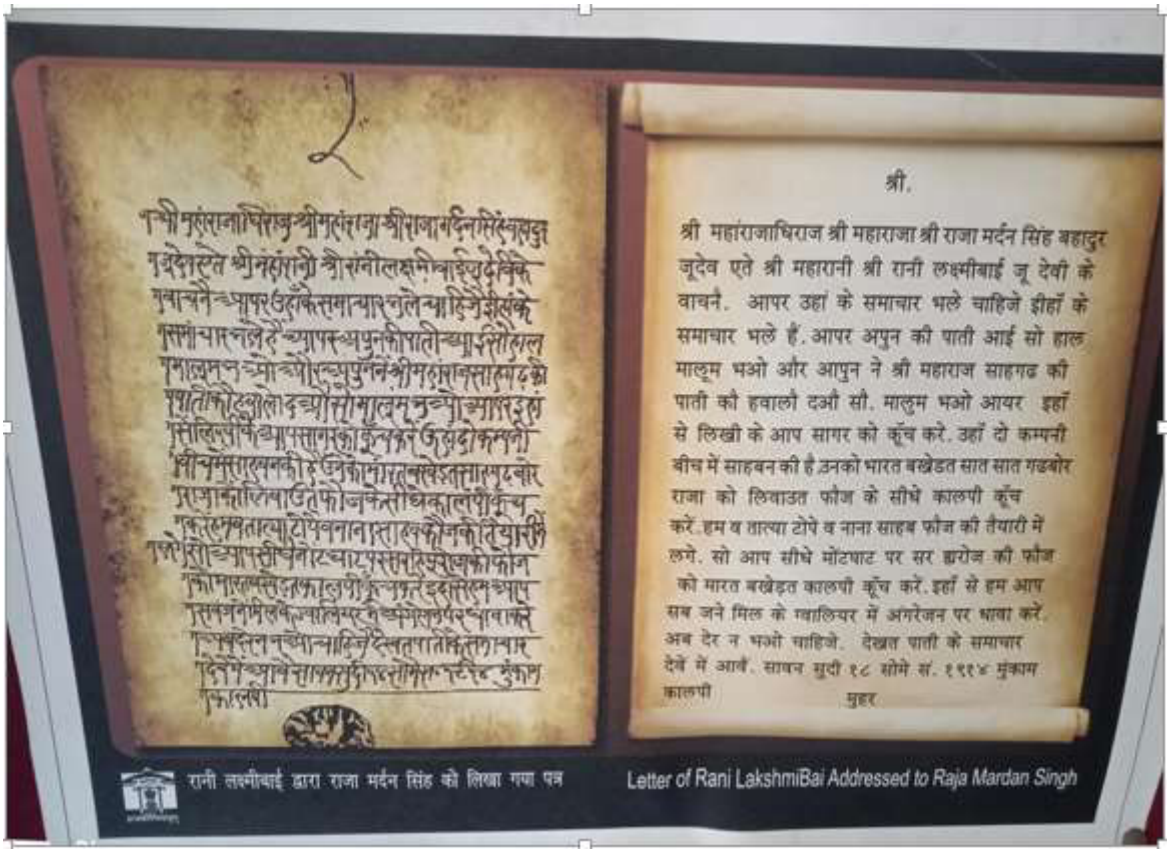

संदर्भ :

1. श्रीवास्तव, भगवानदास, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और बानपुर राजा मर्दन सिंह, राजकीय संग्रहालय, झाँसी, 2007 पृ. 10,18-19
2. उपाध्याय, मधुकर, विष्णुभट्ट की आत्मकथा (विष्णुभट्ट गोडसे की माँझा प्रवास का हिन्दी अनुवाद) वाणी प्रकाशन, 2014 पृ. 77-81
3. अंसारी, मुजफ्फर अहमद, चन्देरी इतिहास और विरासत, सागर एडवर्टायजर्स एंड प्रिन्टर्स, ग्वालियर, 2005 पृ. 59-60
4. द्विवेदी बाबूलाल, बानपुर विविधा, विमल प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, उरई, 2008 पृ. 10-23
5. गोस्वामी, बासुदेव, विद्रोही बानपुर प्रकाशन मन्दिर लि., 1954 पृ. 2-16, 21-40
6. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास, बाबूलाल जैन महावीर प्रेस, वाराणसी, 1991 पृ. 81
7. असर, ओमशंकर, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और बानपुर राजा मर्दन सिंह पृ. 13-19

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

8. असर, ओमशंकर, क्रांति वीर बानपुर चन्देरी नरेश महाराजा मर्दन सिंह जूदेव, राजकीय संग्रहालय, झाँसी 2007 पृ. 25
9. श्रीवास्तव, भगवानदास, 1857 की क्रांति और विद्रोह राजा बखतवली, शांति प्रकाशन, भोपाल 1995 पृ. 18-32
10. श्रीवास्तव, भगवानदास पूर्वोक्त पृ. 112-114
11. पारसनीस द. ब., झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, गांधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, 1982
12. काये एण्ड मालेसन, हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटनी ऑफ 1857-8, जिल्द 5, लॉगमन, ग्रीन एण्ड कंपनी लंदन, 1907 पृ. 65-72
13. रानी लक्ष्मीबाई द्वारा मर्दन सिंह को लिखे गये पत्र चैत सुदी 20 भौम सं. 191
14. श्रीवास्तव, भगवानदास, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और बानपुर राजा मर्दन सिंह, राजकीय संग्रहालय, झाँसी 2007 पृ. 45-47

Citation

आकाश शर्मा. (2024). **बानपुर नरेश मर्दन सिंह की** 1857 **की क्रांति में भूमिका**. International educational applied research journal, 08(11), 41–48. https://doi.org/10.5281/zenodo.14202734